International Journal of Academic Research
ISSN: 2348-7666; Vol.7, Issue-8(1), August, 2020
Impact Factor: 6.023; Email: drtvramana@yahoo.co.in

"ठीकरे की मंगनी" की वस्तुगत संरचना

- डॉ.कुमार नागेश्वरराव

Prof. Kumara Nageswara Rao
HOD of Hindi
Sri Y.N.College (A)
Narasapur-534275,W.G.Dist. A.P.
Cell: 8247018251

हिन्दी कथा साहित्य में नासिरा शर्मा अपनी अलग पहचान रखती हैं। नासिरा शर्मा के कथा साहित्य की प्रमुख विशेषताओं में साझा संस्कृति, सांप्रदायिकता, सूक्ष्मतम मानवीय संवेदनाएँ, मानवतावाद, पर्यावरण, संतुलन, नारी अस्मिता आदि का समावेश है, जो अपने समय के साथ सरोकार रखती हैं।

'ठीकरे की मंगनी में' अपने समय के सच को, समाज में दिन-व-दिन हो रहे मूल्यात्मक परिवर्तन और उस आपाधापी में जीवन जी रहे मुस्लिम समाज के ही नहीं, संपूर्ण समाज के सच को अभिव्यक्त करता है। नासिरा जी का उपन्यास 'ठीकरे की मंगनी में' साहित्य अपने समय से सरोकार रखता है। 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में नासिरा जी ने मुस्लिम समाज के वर्तमान स्थितियों का चित्रण किया है। रूढ़-परंपराओं, अंधविश्वसों, अंतर्विरोधों, ढकोसलों को 'महरुख' पात्र के माध्यम से बेनकाब किया है। 'ठीकरे के मंगनी' उपन्यास के द्वारा लेखिका ने अनेक समस्याओं के चित्रण करते समय किसी भी वर्ग या समाज की समस्याओं को तान देकर वर्ग भेद की दर मिटाने का प्रयास करते हुए 'सर्व धर्म समभाव' पर विश्वास प्रकट किया है। 'ठीकरे की मंगनी' सांझा संस्कृति और हिंदु-मुस्लिम सौहार्द का हिमायती है।

नासिरा जी जाति और धर्म की संकीर्णताओं से बाहर निकलकर मानवीय क्रूरता व बर्बरता के खिलाफ लेखनबद्ध है। जहाँ दुःख है, पीड़ा है, जुल्म है, उत्पीडन है, शोषण है वहाँ नासिरा जी अपने लेखन द्वारा इंसान की सोई चेतना और इंसानियत को झकझोर कर जगाने का प्रयास करती हैं। नासिरा शर्मा ने 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास के ज़रिए में स्त्री की भावनाओं और संवेदनाओं का मार्मिक चित्रण किया है। नासिरा शर्मा का साहित्य नारी मन के अनेक पहलुओं को उजागर करता है। उन्होंने जन-जीवन की त्रासदी को अलग दृष्टि से देखा, परखा और अपने संवेदनशील मन से सशक्त रूप में प्रस्तुत किया है। समाज में प्रचलित विकृतियाँ अंधानुकरण, धार्मिक कट्टरता, आधुनिकता आदि को उन्होंने अपने साहित्य में प्रमुख लक्ष्य बनाया है।

सन् 1971 में नासिरा शर्मा ने 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास लिखा है जो महिला केन्द्रित है। इस उपन्यास में मुस्लिम शिया परिवार का चित्रण किया गया है। नारी की पहचान उसके जीवन की अर्थवत्ता उसकी निर्यात एवं संभावनाओं को केंद्र में रखकर 'महरुख' नाम के नारी की जीवन-यात्रा को चित्रित किया गया है। महरुख एक ऐसे पारंपरिक मुस्लिम सैयद परिवार में जन्म लेती है जिस खानदान में पहले लड़कियाँ ज़िंदा नहीं रहती थीं उन्हें ज़िंदा रखने केलिए एवं तमाम बलाएँ टालने केलिए एक टोटके के तहत उसकी मंगनी ठीकरे से कर दी जाती है।

साथ ही शाहीन खाला उसे अपने बेटे रफत के साथ उसी दिन बाँध देती है। नवजात बच्ची जन्म के साथ ही किसी और की हो जाती है। उसकी मंगनी अपने खालाजाद भाई के साथ कर दी जाती है।

इसके बाद उसे अपने खालाजाद भाई के साथ सारी ज़िंदगी के लिए बाँध दिया जाता है। माँ-बाप के नाजों में पली महरूख रफत मियाँ को ही अपनी ज़िंदगी का आधार समझने लगती है। वह हर प्रकार से स्वयं को रफत के साँचे में ढ़ालने का प्रयत्न करती है उसकी खुशी केलिए वह परिवार से बिछुड़कर दिल्ली जाकर पढ़ाई करती है। लेकिन महत्वाकांक्षी रफत का व्यक्तित्व उस वक्त बेनकाब हो जाता है। जब वह अमेरिका जाकर किसी लड़की के साथ बंध जाता है। महरुख इस समाचार से सूखे पत्ते की भांति कांप रह जाती है और यहीं उसका कायाकल्प शुरु होता है। वह अपनी जड़े ज़माने केलिए प्रयत्नशील हो जाती है और रफत का दिया हुआ खोल उतारकर दिल्ली में ज़िंदगी से गाँव की ओर प्रस्थान करती है। थोड़ी बहुत अस्थिरता के बाद स्वयं को गाँव की ज़िंदगी में वहाँ के लोगों में अपने को इस कदर स्थापित कर लेती है कि रफत मियाँ की वापसी, उनका पछतावा उनकी क्षमायाचना से भी वह विचलित नहीं होती है। "एक उम्र होने के बाद भी वह अपने सामर्थ्य के बारे में आश्वस्त होकर कहती है, एक घर औरत का अपना भी तो हो सकता है जो उसके बाप और शौहर के घरसे अलग उसकी मेहनत और पहचान का हो।"[24]

महरुख को रफत दिल्ली लाकर एक नये माहौल में फिट करने की कोशिश करता है। लेकिन महरुख की अपनी एक सोच है। वह ऊपरी आडंबर पूर्ण माहौल में नहीं बसना चाहती है, "रफत यहाँ लाकर उसे जैसे बिना तैरना सीखे ही एक दरिया में छोड़ देता है और अब डूबता या पार करना उसका अपना काम है।"[25] रफत अमेरिका से वापस आते समय अपनी अमेरीकन पत्नी को तलाक देता है। वह महरुख से बातचीत करते समय बड़ा ही सहज ढंग से वह अपनी इस कार्यवाही को 'वे ऑफ लाइफ' बताकर उसे डिफेंड करता है। शादी के प्रस्ताव पर महरुख का उत्तर है, "मैं जगह चीज़ या मकान नहीं थी, रफत भाई, जो वैसी ही रहती। मैं इंसान भी, कमज़ोरियों का पुतला। मैं ने आपको जिस भरोसे भेजा था आप भी वैसे कहाँ रह पाए? कुछ चीज़ों कितनी बेआवाज़ टूटती है। मैं बेआवाज़ टूटी थी, किरच-किरच होकर बिखरी थी। बड़ी मुश्किल से अपने को चुना है, समेटा है, जोड़ा है, तब कहीं जीने के काबिल हुई हूँ। मुझसे अब मेरी यह ज़िंदगी वापस मत छीनिए।"[26]

महरुख शुरू में आम परंपरागत लड़कियों की तरह अपने आप को रफत के साँचे में ढ़ालने की कोशिश में लगी रहती है। हालत की मार से पुख्त बनी महरुख अपने आप को संघर्षरत रखती है। लेखिका के मत में – मेरा विश्वास है कि इन्सान दो बार जन्म लेता है, पहली बार माँ की कोख से और दूसरी बार हालात की मार से प्रत्येक व्यक्ति कुछ सोच कर आगे बढ़ने केलिए किसी एक दिशा की ओर कदम बढ़ाता है, मगर हवा उसे किसी दूसरी

[24] नासिरा शर्मा – ठीकरे की मंगनी - पृ.सं.93

[25] डॉ.मधु संधु – महिला उपन्यासकार - पृ.सं.89

[26] डॉ. नगेंद्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास – पृ.सं.93

दिशा की ओर उड़ा ले जाती है। बनना वह कुछ चाहता है और बन कुछ जाता है। इन्सान जैसा उपर से दिखता है वैसा वह अन्दर से होता नहीं है। किसी भी व्यक्ति के अन्दर ज़रा सा झांकिए तो महसूस होगा कि तहखाने-दर-तहखाने, कोठरियाँ – दर कोठरियाँ, गलियाँ-दर गलियाँ और जाने कितने फर-पेच-खम रास्तों का जाल फैला है, जिस पर से वह चल कर यहाँ पहुँचा है, जहाँ पर आपसे उसकी पहली मुलाकात होती है और आप पल भर में उसके व्यक्तित्व के बारे में फतवा दे बैठते हैं। "औरत के बदलते वजूद का दस्तावेज यह उपन्यास चंद सवाल बड़ी निर्ममता से उछालता है, मसलन घर का सवाल ..... औरत-मर्द की बराबरी का सवाल।"[27]

महरुख राजधानी छोड़-छोटे से गाँव में आकर अपनी ज़िंदगी जीती है। स्कूल में टीचर का काम करते समय साथी टिचर की महिलाओं सुख-दुःख को सुन उसे लगता है स्त्री को सिर्फ सहना और बर्दाश्त करना है। सारी कथित स्वतंत्रता और संविधान में दज बराबरी के दावे के बावजूद समाज में स्त्री और पुरुष का रिश्ता अभी भी अपने आदिम रूप में है अर्थात मालिक और गुलाम का रिश्ता। वह महसूस करती है कि सामाजिक परिवर्तन केलिए ज़िंदगी से मुनमईन हूँ। महरुख की सोच समकालीन नारी की उस सोच को दर्शाती है जो समय की धारा में संबन्धों को बिना कोई नाम दिए, भविष्य केलिए नई संभावनाओं के घर खोलकर नारी को एक स्वतंत्र व उन्मुक्त अस्तित्व प्रदान करती है, "वस्तुतः स्त्रियाँ ही नारी जगत को पुरुषों की अपेक्षा ज़्यादा आंतरिकता से जानती हैं क्योंकि उनकी जड़ें इसमें निहित हैं।

नासिरा शर्मा का यह उपन्यास नारी चेतना का बहुत सशक्त प्रतिनिधित्व करता है। इसका स्वर बहुत लाउड़ नहीं है पर क्या चीख पुकार के बिना कोई बडी बात कही ही नहीं जा सकती। यह उपन्यास महरुख के माध्यम से नारी के अन्तः साक्षात्कार का उपन्यास है, उसकी अपनी पहचान का उपन्यास है। यह उस नारी की गाथा है जो अपने आप को खोकर और कुछ पाना नहीं चाहती। उपन्यास का प्रमुख आकर्षण इसकी प्रवाहमयी भाषा भी है जिसमें उर्दू का छोंक कुछ गहरी लगी हुई है। जिस परिवेश को इस उपन्यास में चित्रित किया गया है उसे देखते हुए यह आवश्यक भी था।"

अंततः स्त्रियों को अपनी लड़ाई खुद लड़नी है। "अपने अस्तित्व और सम्मान लड़ी जानेवाली लड़ाई एक लंबी लड़ाई है और बिना दिमाग को हथियार बंद किए कोई लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती।"[28]

महरुख का बाईस भाई-बहनोंवाला परिवार अलग-अलग शहरों में बिखर जाता है। महरुख अपने अस्तित्व की लड़ाई पूरी शिहत के साथ लड़ती है। वह आज आनेवाली पीढ़ी केलिए मिसाल है। इसी कारण महरुख के चाचाजाद भाई की लड़की भी बड़ी होकर महरुख फुफ्फी बनना चाहती है। तनवीर अपनी की हरकत में गुस्से में आकर कहता है, तुमने बहुत कुछ सुना दिया मुझे ..... आगे अहतियात बरतना, कभी भी महरुख आप की शान में

[27] डॉ.विनय शर्मा – व्यक्तित्व एवं कृतित्व – पृ.सं.75

[28] डॉ.विनयशर्मा – व्यक्ति एवं रचनाकार – पृ.सं.93

मेरे सामने गुस्ताखी मत करना अगर उनकी बनावट का साँचा मेरे पास होता तो मैं अपनी क्या सारे खानदान, सारे शहर, सारे मुल्क की लड़कियों को उस साँच में ढाल देता है।

महरुख की उसकी अपनी सोच है। महरुख को लेकर उसकी बूढ़ी माँ हमेशा चिंतित रहती है। लेकिन महरुख अब पुख्ता बन गयी है। ज़िंदगी को लेकर उसकी अपनी सोच है। जो उसने अनुभव किया, महसूस किया वही अपनी ज़िंदगी में किया। अपनी ज़िंदगी अपने मुताबिक जी है। वह अपनी माँ से कहती है "तो मैं ने भी अपनी पसंद की ज़िंदगी जीने की कीमत अदा की है मैं अपनी को रक्षा केलिए उन्हें अपने हक में कदम उठाना है।'ठीकरे की मंगनी' में लोकभाषा का सुन्दर प्रयोग मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास में अरबी, फारसी, और उर्दू शब्दों की भरमार है। नासिरा शर्मा ने इलाहाबादी संस्कृति की सूक्ष्मतम इकाइयों को आधार बनाकर संपूर्ण इलाहाबाद के जीवन की तस्वीर विभिन्न रंगों एवं छवियों में मुखरित की है। इसमें इलाहाबाद की प्रत्येक धड़कन है, स्पन्दन है, सोंच है, चिंतन है, रहन-सहन है, रीति रिवाज़ है, आचार-विचार हैं, धरम-करम है, परंपरएँ हैं, विश्वास-अंधविश्वास है, बोली है, खानपान है, शगुन-अशगुण है, उतार-चढ़ाव है, अंतर्द्वन्व्द है, समयानुसार बदलने चित्रण हैं, स्वकेद्रिता और कृत्रिमता है, मूल्यों और मूल्यहीनता के बीच चल रहा संघर्ष है।

<u>सहायक ग्रंथ सूची</u> :

1. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास – वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-1985
2. विनयशर्मा – व्यक्ति एवं रचनाकार – अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपूर - 1986
3. डॉ.मधु संधु – महिला उपन्यासकार – अतुल प्रकाशन, कानपूर - 1988
4. मोहिनी शर्मा – हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य – साहित्यकार प्रकाशन – जयपूर – 1986.
5. बलराज सिहमार – मानव मूल्य और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास – खामा पब्लिषर्स – दिल्ली – 2002.
6. मालती जोशी के उपन्यासों में सामाजिक चेतना – डॉ.इंदिरा शांता – अतुल प्रकाशन, कानपूर - 1999
7. हिन्दी कहानी और नारी विमर्श के अहम सवाल - डॉ.सोभा पवार – अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपूर - 2002

<u>पत्र पत्रिकाएँ</u>:-

1. हंस –अगस्त 2012
2. स्रवंती – अक्तूबर 2008
3. कल्पना – मार्च 2000
4. आलोचना – सितंबर 1998
5. धर्म युग – अगस्त 1995